डा० राम आशीष

असिस्टेण्ट प्रोफेसर

हिन्दी

विषय - काव्य प्रयोजन

कक्षा - बी०ए० तृतीय वर्ष

Scanned with CamScanner

|| काव्य प्रयोजन ||

इस संसार में हर कर्म के पीछे उसका प्रयोजन होता है, भले वह परोक्ष ही क्यों न हो। कहने को कितना भी निष्काम कर्म क्यों न हो लेकिन इसके पीछे उसका प्रयोजन अवश्य छिपा रहता है। उसी प्रकार कोई भी रचना निष्प्रयोजन नहीं होती है। प्रयोजन सूक्ष्म से सूक्ष्म (मन का उन्नयन, चेतना का संस्कार, संवेदना का विस्तार, ब्रह्मानन्द की प्राप्ति) स्थूल से स्थूल (अर्थ की प्राप्ति, लोक व्यवहार का ज्ञान, अनर्थ का निवारण आदि) हो सकता है। लेकिन होता अवश्य है।

भारतीय आचार्यों ने इस पर अपना मत रखा है। काव्य प्रयोजन पर सर्वप्रथम आचार्य **भरतमुनी** ने अपने नाट्यशास्त्र में लिखा है।

"दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम् ।
विश्रान्ति जननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति ॥
धर्म्यं यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धि विवर्धनम् ।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति ॥"

अर्थात दुःख, श्रम, शोक से आर्त तपस्वियों के विश्राम के लिए तथा धर्म, यश, आयु-वृद्धि, हित-साधन, बुद्धि-वर्धन और लोकोपदेश के निमित्त नाट्य की रचना होगी।

भामह भरतमुनि के काव्य प्रयोजनों का परिष्कार करते हुए लिखते हैं-

"धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च ।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्य निबंधनम् ॥"

Scanned with CamScanner

अर्थात काव्य की रचना धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारो पुरुषार्थों की प्राप्ति तथा कलाओं में निपुणता की उपलब्धि के निमित्त की जाती है। साथ ही वह कीर्ति एवं प्रीति (आनन्द) प्रदान करने वाली भी होती है।

आचार्य वामन ने मात्र कीर्ति और प्रीति को ही काव्य का प्रयोजन स्वीकार किया है।

"काव्यं सद् दृष्टादृष्टार्थं प्रीति कीर्ति हेतुत्वात्।

अर्थात सुन्दर काव्य कीर्ति और प्रीति का हेतु होने से दृष्ट (ऐहिक, लौकिक) और अदृष्ट (आमुष्मिक) फल वाला होता है।

आचार्य रुद्रट की मान्यता है कि काव्य रचना के द्वारा महापुरुषों के यश को स्थायित्व प्राप्त होता है। कवि को आनुषंगिक फल, धन आदि की प्राप्ति भी होती है।

आचार्य कुन्तक के अनुसार काव्य रचना के तीन प्रयोजन हैं -

1- चतुर्वर्ग फल प्राप्ति।

2- व्यवहार ज्ञान।

3- लोकोत्तर आनन्द की प्राप्ति।

आचार्य मम्मट ने अच्छी तरह सोच-समझकर काव्य प्रयोजनों का विशद विवेचन किया है। उन्होंने छः काव्य प्रयोजन माना है -

Scanned with CamScanner

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥"

अर्थात काव्य यश का जनक, अर्थ का उत्पादक, लोक व्यवहार का बोधक, अनिष्ट का नाशक, पढ़ने या सुनने के साथ ही परम आनन्द देने वाला और स्त्रियोंकी सरस पद्धति से कर्तव्याकर्तव्य का उपदेश प्रदान करने वाला होता है। उपर्युक्त प्रयोजनों में से तीन- अर्थ, यश और अनिष्ट नाश, कवि और रचनाकार को दृष्टि में रखकर और तीन व्यवहार- ज्ञान, सद्यः आनन्द और कांतासम्मित उपदेश- पाठक या श्रोता को ध्यान में रखकर निर्दिष्ट किया गया है।

गोस्वामी तुलसीदास ने काव्य को 'स्वान्तः सुखाय' मानते हुए भी सबका हित सिद्ध करने वाला माना है-

"कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सबकर हित होई॥"

अर्थात कीर्ति, कविता और संपत्ति वही उत्तम है, जिससे बिना भेद भाव के सबका कल्याण हो। जैसे देवनदी गंगा अपने जल की शीतलता, निर्मलता और पवित्रता से सबका हित-साधन करती है।

कुलपति मिश्र ने कहा है-

"जस संपति आँनद अति दुरितन डारै खोइ।
होत कवित में चतुराई जगत राम बस होइ॥"

अर्थात काव्य से यश, संपत्ति और आनन्द की प्राप्ति होती है। संकट या पाप दूर हो जाता है और चतुरता आती है।

Scanned with CamScanner

संसार के लोग कविता में निहित राग तत्व के वशीभूत हो जाते हैं।

महाकवि देव यश को काव्य का प्रधान प्रयोजन मानते हुए कहा है-

"रहत न घर वर धाम धन, तरुवर सरवर कूप।
जस शरीर जग में अमर, भव्य काव्य रस रूप॥"

अर्थात घर, धाम, धन, वृक्ष, सरोवर, कूप सब नष्ट हो जाते हैं। किंतु रस रूप भव्य काव्य के कर्ता का यशरूपी शरीर संसार में अमर हो जाता है।

मैथिलीशरण गुप्त ने काव्य का उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं माना है। उनका मानना है कि कविता में जीवन के लिए सार्थक उपदेश होना चाहिए।

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए॥"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार -

"काव्य का अंतिम लक्ष्य जगत के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उनके साथ मनुष्य ~~का~~ हृदय का सामंजस्य प्रतिस्थापन है।"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार -

"मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके, जो आत्मा को तेजोदिप्त न बना सके, जो उसके दुःख को परदुःख-

कातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।
आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने आत्मानुभूति को ही काव्य का प्रयोजन माना है। डॉ० नगेन्द्र के अनुसार आत्माभिव्यक्ति को साहित्य का प्रयोजन मानना समीचीन है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा - डॉ० रामचन्द्र तिवारी

2 - भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र - डॉ० अर्चना श्रीवास्तव

3 - काव्यशास्त्र - डॉ० भगीरथ मिश्र

Scanned with CamScanner